भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए ९ से १५ नवंबर, २०१५ साप्ताहिक सलाह

(५२ वां मानक सप्ताह)

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

राज्य/ जिले	नवंबर माह में वर्षा की स्थिति (मिली मी.)							साप्ताहिक सलाह
दिनांक	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
पंजाब								
भटिंडा	0	0	0	0	0	0	0	कपास की फसल इस समय फलन और गूलर निर्माण अवस्था में है। चूँकि लगभग सभी गूलर खुल चुके हैं तथा कपास चुनाई का कार्य चल रहा है अतः इस अवस्था में सफेद मक्खी नियंत्रण के लिए कुछ उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। किसान भाई साफ–सुथरी कपास चुनें। साफ–सुथरी कपास को चिपचिपी कपास से अलग रखें। दोनों प्रकार की कपास को न मिलाएँ। पहली चुनाई की कपास को भी अलग रखने की आवश्यकता है। इस समय जिन खेतों में एक–तिहाई से अधिक गूलर खुल चुके हैं उन खेतों में सिंचाई देने की भी आवश्यकता नहीं है। सड़े हुए गूलरों से कपास न चुनें। सूक्ष्मजीवों के नुकसान से बचाने के लिए कपास को भण्डारण से पहले सुखा लें। राजस्थान के कुछ हिस्सों में पिछली फसल तथा दीर्घ अवधि के संकरों में जैसिड की संख्या आर्थिक हानि सीमा से अधिक तथा सफेद मक्खी की सीमा आर्थिक हानि सीमा के निकट है। उत्तरी भारत में गूलर की गुलाबी सूँडी का नुकसान दर्ज किया गया है। इस सूँडी का नुकसान कुछ स्थानों में तो 60% तक है। किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि फसल को आगे बढ़ाने के स्थान पर शीघ्र समाप्त कर दें। कपास के डंढल व अन्य फसल अवशेषों और गुलाबी सूँडी से ग्रसित कपास का संग्रह न करें।
फिरोजपुर	0	0	0	0	0	0	0	
मुकतसर	0	0	0	0	0	0	0	
मानसा	0	0	0	0	0	0	0	
हरियाणा								
सिरसा	0	0	0	0	0	0	0	
हिसार	0	0	0	0	0	0	0	
फ़तेहाबाद	0	0	0	0	0	0	0	
राजस्थान								
हनुमानगढ़	0	0	0	0	0	0	0	
श्रीगंगानगर	0	0	0	0	0	0	0	
बांसवाड़ा	0	0	0	0	0	0	0	
उड़ीसा								फसल इस समय गूलर विकास तथा परिपक्वावस्था में है। रस चूषक कीटों, *स्पोडोप्टेरा,* धब्बेदार तथा अमेरिकन सूँडियों का प्रकोप कहीं–कहीं देखा गया है जो आर्थिक हानि सीमा से कम है। छिट–पुट स्थानों पर जीवाणु झुलसा का प्रकोप भी दर्ज किया गया है। परामर्शी के परिशिष्ट में दिए गए उपायों से नाशीकीटों और रोगों की रोकथाम करें। डी.ए.पी. 1.5% के साथ 0.75% पोटेशियम नाइट्रेट का फसल पर छिड़काव शेष गूलरों के विकास के लिए करें। शीर्ष पुष्पन और गूलर निर्माण अवस्था में डी.ए.पी. तथा सूक्ष्म पोषकतत्वों के फसल पर छिड़काव से अधिक उपज लेने के लिए तथा गूलरों को फसल पर धारण करने में मद्द मिलेगी। लाल पत्ती रोग प्रबंधन के लिए 10 ग्रा. यूरिया + 10 ग्रा. मेग्नीशियम सल्फेट प्रति लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें। प्रातः 10.00 बजे के बाद ही पूरी तरह से खुले हुए गूलरों से कपास चुनें। पहली चुनी हुई कपास को अलग रखें और भण्डारण से पहले इसे सुखा लें। परिशिष्ट में सिफारिश किए गए उपायों से मुरझान तथा लाल पत्ती रोग की समस्या से निपटें।
कोरापुट	0	0	0	0	0	0	0	
कालाहांडी	0	0	0	0	0	0	0	
बोलांगीर	0	0	0	0	0	0	0	
गुजरात								
अमरेली	0	0	0	0	0	0	0	फसल इस समय पुष्पन तथा गूलर निर्माण अवस्था में है। गूलर की गुलाबी सूँडी : किसानों को सलाह दी जाती है कि बीटी तथा गैर बीटी कपास की गुलाबी सूँडी के लिए निगरानी करते रहें। हरे गूलरों में गुलाबी सूँडी का नुकसान बालगार्ड–II कपास में सूरत, भड़ोच, वडोदरा, अहमदाबाद, भावनगर तथा अमरेली में क्रमशः 52–65%, 22–88%, 8–72%, 32–64%, 8–75% तथा 40–75% के मध्य रिकार्ड किया गया। बीटी रहित कपास में गुलाबी सूँडी की हानि तीन स्थानों सूरत, भड़ोच तथा आनंद में क्रमशः 52, 60 तथा 48% दर्ज की गयी। गुलाबी सूँडी का प्रकोप *जी. हर्बेशियम* में न्यूनतम दर्ज किया गया। इस सूँडी का प्रकोप नवंबर तथा दिसंबर में बढ़ने की संभावना है। किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि गुलाबी सूँडी की निगरानी के लिए फीरोमेन ट्रैप @ 5–6/हे. फसल में लगाएँ। 8 पतंग प्रति ट्रैप प्रति रात्रि सतत 3 रातों तक पकड़ में आने और/अथवा हरे गूलरों में वृध्दिशील सूँडियों सहित 10% हानि के आर्थिक हानिस्तर पर पहूँचने पर नवंबर में संश्लेषित पाइरेथ्राइड का फसल पर छिड़काव करें। नियंत्रण उपाय न करने पर इस सूँडी का इस महीने में भारी नुकसान हो सकता है। कीटनाशक मिश्रणों का अनुप्रयोग कभी न करें। ऐसा करने से सफेद मक्खी की समस्या बढ़ सकती है जो कपास के चिपचिपी होने का कारण बनेगी। किसान भाईयों को सलाह दी जाती है कि फसल काल अगले वर्ष 2016 में बढ़ाने की अपेक्षा दिसंबर तक ही समाप्त कर दें। ऐसा करने से गुलाबी सूँडी का प्रकोप कम होगा और बीटी कपास में इस सूँडी के लिए प्रतिरोधकता निर्माण में भी कमी आएगी। पिछले वर्ष की कपास की सूखी लकड़ियों के ढेर खेतों की मेढ़ों पर कहीं–कहीं दिखाई दे रहे हैं। इन्हें तुरन्त नष्ट कर दें। घर अथवा भंडार में रखी इस सूँडी से क्षतिग्रस्त कपास/बीज अगली फसल में इसके स्रोत का कार्य कर सकती है। अतः इस क्षतिग्रस्त बीज को तुरन्त नष्ट कर दें।
भावनगर	0	0	0	0	0	0	0	
जामनगर	0	0	0	0	0	0	0	
अहमदाबाद	0	0	0	0	0	0	0	
सुरेन्द्रनगर	0	0	0	0	0	0	0	
वडोदरा	0	0	0	0	0	0	0	
राजकोट	0	0	0	0	0	0	0	
भरूच	0	0	0	0	0	0	0	
पाटन	0	0	0	0	0	0	0	
सबरकांठा	0	0	0	0	0	0	0	
मेहसाना	0	0	0	0	0	0	0	

मध्यप्रदेश								फसल पुष्पन तथा लघुकली की प्रारंभिक अवस्था, गूलर निर्माण व गूलर खुलने की अवस्थाओं में है। जैसिड तथा सफेद मक्खी का प्रकोप आर्थिक हानि सीमा से ऊपर लेकिन एफिड तथा फूलकीट का प्रकोप मुख्यतः पिद्देती फसल तथा दीर्घ अवधि संकरों में आर्थिक हानि सीमा से कम है। किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि परिशिष्ट में सिफारिश के अनुसान दिए गए नियंत्रण उपायों को आवश्यकतानुसार इन कीटों के नियंत्रण के लिए अपनाएँ।
खरगोन	0	0	0	0	0	0	0	
धार	0	0	0	0	0	0	0	
खंडवा	0	0	0	0	0	0	0	
महाराष्ट्र								
नागपुर	0	0	0	0	0	0	0	फसल में पुष्पन की दूसरी बहार प्रारंभ हो चुकी है। बीटी कपास संकरों में लाल पत्ती रोग देखा जा रहा है। लाल पत्ती रोग से अधिक प्रभावित होने वाले बीटी संकरों की पहचान करके किसान भाई अगले वर्ष उनकी खेती न करें। लाल पत्ती रोग की निगरानी करते रहें और इसके प्रबंधन के आवश्यक उपाय करें। कुछ क्षेत्रों में सफेद मक्खी की संख्या, विशेषतः उन खेतों में जहाँ पाइरेथ्राइड तथा कीटनाशक मिश्रणों का प्रयोग किया गया है, बढ़ी है। कपास का अच्छा भाव लेने के लिए साफ–सुथरी कपास चुनें। पिद्देती फसल में पुष्पन अवस्था में 2% यूरिया अथवा 2% डी.ए.पी. के छिड़काव के साथ संरक्षक सिंचाई दी जा सकती है। गूलर विकास अवस्था में 1.0% यूरिया के साथ 1.0% मेग्नीशियम सल्फेट का फसल पर छिड़काव करें। फीरोमोन ट्रैप का प्रयोग करके गुलाबी सूँडी की निगरानी करते रहें। यदि ट्रैप में पतंगों की संख्या 8 पतंग प्रति ट्रैप प्रति रात्री सतत 3 रातों में आने की आर्थिक हानि सीमा पर पहुँचने पर सिफारिश किए गए नियंत्रण उपाय अपनाएँ। बीजी–I, बीजी–II तथा गैर बीटी कपास में गुजरात के सीमावर्ती जिलों और उन खेतों में जहाँ फसल मार्च/अप्रैल तक कायम रखी गई थी, हरे गूलरों में हानि देखते हुए गुलाबी सूँडी की निगरानी करें। अनुसंधान फार्म पर गुलाबी सूँडी का प्रकोप बोलगार्ड II में 5% से कम तथा गैर बीटी कपास में 30% तक पाया गया। अधिकांश स्थानों पर देसी कपास की एक चुनाई हो चुकी है। क्रॉप सैप रिपोर्ट : जालना जिले के 30% से अधिक गांवों मे जैसिड संख्या आर्थिक हानि से ऊपर दर्ज की गई। जैसिड संख्या जिन जिलों में 10 से 30% गांवों में इ.टी.एल. से ऊपर पाई गई वे हैं चन्द्रपुर (18.42% गांवों में), नांदेड (17.36% गांवों में), और औरंगाबाद (14.28% गांवों में)। जिन जिलों में 10% से भी कम गांव जैसिड प्रकोप से प्रभावित रहे वे हैं नागपुर (8.48% गांव), हिंगोली (6.32% गांव), बुलढाणा (5.12% गांव) तथा अकोला (3.93% गांव)। अमरावती जिले में 14.43% गांवों मे सफेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि सीमा से ऊपर दर्ज की गई। लाल पत्ती रोग से प्रभावित जिले नागपुर 63.39% गांव, परभणी 44.25% गांव, अहमदनगर 43.95% गांव, यवतमाल 40.18% गांव, धुले 20.04% गांव, चन्द्रपुर के 30.26% गांव, गडचिरोली के 18.18% गांव, वर्धा जिले के 16.81% गांव, बुलढाणा के 16.66% गांव, अमरावती के 15.84% गांव, वाशिम के 10.15% गांव, औरंगाबाद के 03.72% गांव, बीड के 14.62% गांव, जालना के 9.51% गांव, नांदेड के 6. 58% गांव तथा अकोला जिले के 6.11% गांव रिपोर्ट किए गए।
वर्धा	0	0	0	0	0	0	0	
चंद्रपुर	0	0	0	0	0	0	0	
यवतमाल	0	0	0	0	0	0	0	
अमरावती	0	0	0	0	0	0	0	
अकोला	0	0	0	0	0	0	0	
बुलढाना	0	0	0	0	0	0	0	
परभणी	0	0	0	0	0	0	0	
नांदेड़	0	0	0	0	0	0	0	
बीड़	0	0	0	0	0	0	0	
वासिम	0	0	0	0	0	0	0	
धुले	0	0	0	0	0	0	0	
जलगांव	0	0	0	0	0	0	0	
जालना	0	0	0	0	0	0	0	
औरंगाबाद	0	0	0	0	0	0	0	
तेलंगाना								
आदिलाबाद	0	0	0	0	0	0	0	फसल पुष्पन से कपास चुनाई अवस्था में है। कम नमी तथा दिन के अधिक तापमान के कारण पत्तियों के पीले पड़ने, मुरझाने तथा सूखने के साथ–साथ पकने से पूर्व गूलरों के खुलने की समस्या देखी जा रही है। उथली जमीनों में कम नमी के कारण मंद वृध्दि तथा गूलरों का आकार छोटा रहने की समस्या दर्ज की गई है। भारी मृदाओं में फसल की वृध्दि सामान्य है। नत्र तथा पोटाश की विखण्डित मात्रा यथासंभव दें। 2% यूरिया + 1.0% मेग्नीशियम सल्फेट का 7 से 10 दिनों के अंतराल पर फसल पर छिड़काव करें। इससे पत्तियों के लाल होने की समस्या में कमी आएगी। लंबे सूखे की स्थिति के कारण कली, पुष्प तथा गूलर झड़न की समस्या से निजात पाने के लिए फसल पर 7 से 10 दिनों के अंतराल पर दो छिड़काव प्लानोफिक्स 0.25 मिली/ली. + 1–2% पोटेशियम नाइट्रेट का 7 से 10 दिनों के अंतराल पर दो छिड़काव पुष्पन अवस्था से गूलर विकास अवस्था के मध्य करें। रस चूषक कीटों की संख्या में जैसिड 0.3 से 1.45/3 पत्तियां, सफेद मक्खी 0.65 से 6.70/3 पत्तियां, फूलकीट 0.35 से 1.65/3 पत्तियां तथा एफिड 1.40 से 2.10/3 पत्तियां रिकार्ड की गई। *राइजोक्टोनिया* जड़ गलन की रोकथाम के लिए कॉपर आक्सी–क्लोराइड @ 3.0 ग्रा./ली. पानी की दर से इसका घोल प्रभावित पौधों की जड़ों में डालें। फफूँदजनित पत्ती धब्बों की रोकथाम के लिए प्रोपीकोनजोल @ 1.0 मिली./लीटर अथवा मेन्कोजेब + कार्बेंडेजिम @ 2.0 ग्रा./ली. पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें। अधिक तापमान के कारण रस चूषक कीटों और *स्पोडोप्टेरा* का प्रकोप देखा जा रहा है। इनकी रोकथाम के लिए परामर्शी के परिशिष्ट में सिफारिश किए गए उपाय अमल में लाएं।
वारंगल	0	2	4	0	0	0	0	
खम्मन	4	3	12	0	0	0	0	
कारिंगर	0	0	4	0	0	0	0	
नालगोंडा	2	6	12	0	0	0	0	
आंध्रप्रदेश								
गुन्टूर	4	6	14	0	0	0	0	
प्रकासम	4	0	7	0	7	0	0	
कर्नाटक								पिद्देती बीटी संकरों में मिज मक्खी मेगोट तथा मिरिड मत्कुण का प्रकोप दर्ज किया गया है। राज्य कृषि विद्यालय द्वारा सिफारिश किए गए उपायों से इनकी रोकथाम करें। अधिकांश कपास उत्पादक क्षेत्रों में रात्री तापमान गिरने से बीटी कपास में लाल पत्ती रोग की समस्या बढ़ सकती है। इससे छुटकारा पाने के लिए पानी में घुलनशील 19:19:19 उर्वरक के 1.0% के साथ 1.0% मेग्नीशियम सल्फेट का फसल पर छिड़काव करें। देसी कपास उत्पादक जिलों के कुछ हिस्सों में देसी कपास की किस्मों में दहिया रोग का प्रकोप देखा जा रहा है। इसकी प्रभावी रोकथाम के लिए कार्बेंडेजिम + मेन्कोजेब (साफ) @ 2 ग्रा./ली. पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें। अधिकांश क्षेत्रों में फसल गूलर खुलने की शीर्ष अवस्था में है। ओस के कारण सुबह के समय कपास भीगी रहती है। अतः कपास में कुछ देर से धूप लगने के बाद चुनाई प्रारंभ करें। ऐसा न करने पर कपास की गुणता में कमी आ सकती है। जहाँ कपास की अधिकांश चुनाई हो चकी है वहाँ फसल की नई वृध्दि के लिए
धारवाड़	11	6	0	0	13	9	0	
हवेरी	0	5	0	3	8	3	0	
मैसूर	12	7	18	29	21	12	6	

								सिंचाई न करें। इससे नाशीकीटों और रोगों की समस्या और बढ़ेगी जिसका आगामी नियमित कपास की फसल पर दुष्प्रभाव पड़ेगा। कपास की सूखी लकड़ियों को जलाने अथवा ईंधन के लिए प्रयोग करने के स्थान पर विधिवत कंपोस्ट बनाने का सुझाव दिया जाता है। इसके भी विकल्प के रूप में अंतिम चुनाई के बाद कपास की फसल के अवशेषों पर ट्रैक्टर से श्लेसर अथवा रोटावेटर चलाकर मिट्टी में मिला दें।
तमिलनाडु								
पेरंबलुर	0	6	0	8	39	3	10	फसल पुष्पन अवस्था में है। दूब घास, *पार्थेनियम* गाजर घास और ट्रायेंथेमा पोर्टुलेकेस्ट्रम जैसे प्रमुख खरपतवारों की रोकथाम के लिए अंकुरण–पश्चात खरपतवारनाशक का अनुप्रयोग किया गया है। एफिड का प्रकोप आर्थिक हानि सीमा से कम दर्ज किया गया है। अन्य नाशीकीटों व रोगों का प्रकोप नहीं दर्ज किया गया।
सलेम	5	7	8	0	28	4	6	
त्रिची	2	4	0	0	39	28	8	
विरडुनगर	0	6	0	3	39	28	16	

	आदर्श वर्षा				
वर्षा मि.मी.	<5	5-20	20-50	50-80	>80

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

वैज्ञानिक	पता
डॉ. के.आर. क्रांति	निदेशक,केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ए. एच. प्रकाश	प्रधान वैज्ञानिक,एवं प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
डॉ. डी. मोंगा	प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,सिरसा (हरियाणा)
डॉ एस. बी. सिंह	प्रधान, फसल सुधार विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. संध्या क्रांति	प्रधान, फसल संरक्षण विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ब्लेज़ डी-सूज़ा	प्रधान, फसल उत्पादन विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. इसाबेला अग्रवाल	वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
श्री एम.सबेस	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
डॉ. एन अनुराधा	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)

प्रभारी वैज्ञानिक, मौसम विज्ञान विभाग (एआइसीएसटीआइपी केंद्र)

वैज्ञानिक		मोबाइल नं.	ईमेल
डॉ. पंकज राठोर	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, फरीदकोट (पंजाब)	09464051995	pankaj@pau.edu
डॉ. (श्रीमति) सुनीत पंधर	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, फरीदकोट (पंजाब)	009814513681	suneet@pau.edu
डॉ. संजीव कुमार कटारिया	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, आरआरएस, भटिंडा (पंजाब)		k.sanjeev@pau.edu
डॉ. जगदीश बेनीवाल	सीसीएस-हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार-124004 (हरियाणा)	09416325420	cotton@hau.ernet.in
डॉ. ऋषिकुमार	सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,सिरसा (हरियाणा)	09729106299	Rishipareek70@yahoo.in
डॉ. रूप सिंह मीना	स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान	09413024080	rsmeenars@gmail.com
डॉ. बी.एस. नायक	उड़ीसा-कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर-751003 (उड़ीसा)	09437321675	bsnayak2007@rediffmail.com
डॉ. गोफाल्डू	नवासारी कृषि विश्वविद्यालय, नवासारी-396450 (गुजरात)	09662532645	girishfaldu@rediffmail.com

डॉ. ऐ. एन. पसलवार	पंजाब राव देशमुख कृषि विद्यापीठ, अकोला-440104 (महाराष्ट्र)	09822220272	adinathpaslawar@rediffmail.com
अरविंद डी. पंडागले	मराठवाडा कृषि विद्यापीठ, नांदेड़ (महाराष्ट्र)	07588581713	arvindpandegale@yahoo.co.in
डॉ. सतीश परसाई	आर.वी.एस. कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर-472002 (म.प्र.)	09406677601	aiccipkhandwa@gmail.com
डॉ. एस. भारती	आचार्य एन जी रंगा कृषि विश्वविद्यालय, एलएएम गुंटूर (आंध्रप्रदेश)	0949072341	bharathi_says@yahoo.com
डॉ. अलादिकट्टी	धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय, धारवाड़ (कर्नाटक)	09448861040	yraladakatti@rediffmail.com
डॉ. एम. वाय. अजयकुमार	धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय, धारवाड़ (कर्नाटक)	09880398690	dr.my.ajay@gmail.com
डॉ. एस. सोमासुंदरम	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय कोयंबटूर (तमिलनाडु)	09965948419	rainfed@yahoo.com
डॉ. एम. गुनसेकरण	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कपास अनुसंधान संस्थान, श्रीविल्लीपुथुर (तमिलनाडु)	09443631359	gunasekaran.pbg@gmail.com

हिन्दी संसकरणः

डॉ. उल्हास नन्दनकर,
मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं
प्रभारी, हिन्दी अनुभाग,
केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)

-- इति --